ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-10* January-2021
Anthology : The Research

उत्तर प्रदेश के आर्थिक विकास में लघु एवं कुटीर उद्योग की भूमिका

Role of Small and Cottage Industries in Economic Development of Uttar Pradesh

Paper Submission: 15/01/2020, Date of Acceptance: 26/01/2020, Date of Publication: 27/01/2021

सौरभ कुमार गुप्ता
शोधार्थी,
वाणिज्य विभाग,
श्री महंन्थ रामाश्रय दास पीजी कॉलेज,
भुडकुडा, गाजीपुर,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

उत्तर प्रदेश के आर्थिक विकास में लघु उद्योग एवं कुटीर उद्योग आर्थिक विकास की प्रक्रिया को तीव्रतर करने एवं आत्मनिर्भरता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। राष्ट्रीय जीवन के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से इन उद्योगों का पक्ष निर्विवाद रूप से बहुत सशक्त है, यह हमारी उन समस्त शक्तियों को विकसित करने का क्षेत्र प्रदान करते हैं, जिनके द्वारा राष्ट्र का विकास संभव हो जाता है प्रदेश में लघु उद्योग धंधों का विकास प्रदेश की बढ़ती हुई बेरोजगारी तथा कृषि पर जनसंख्या के दबाव को कम करने की दृष्टि से बहुत सहायक है, वाराणसी का कालीन उद्योग, साड़ी उद्योग, दियासलाई उद्योग, रेशम उद्योग, मिर्जापुर का गलीचा उद्योग, वाराणसी तथा मुरादाबाद का पीतल उद्योग, फिरोजाबाद का चूड़ी उद्योग, जौनपुर का कताई मील आदि लघु एवं कुटीर उद्योगों के ऐसे उदाहरण हैं। जिनकी मार्ग विदेशों में अत्यधिक है, अंतरराष्ट्रीय व्यापार में इन वस्तुओं की मांग आज भी बनी हुई है, इसके साथ ही प्रदेश के अन्य जिलों में भी अनेक प्रकार के हस्तशिल्प उद्योगों का विकास हुआ है।

Small industries and cottage industries play an important role in speeding up the process of economic development and increasing self-reliance in Uttar Pradesh's economic development. The aspect of these industries is undeniably very strong from the point of view of all-round development of national life, it provides the area to develop all our powers through which the development of the nation becomes possible. Development of small scale industries in the state Is very helpful in terms of increasing unemployment and reducing population pressure on agriculture, carpet industry of Varanasi, Sari industry, match industry, silk industry, carpet industry of Mirzapur, brass industry of Varanasi and Moradabad, Bangle industry of Firozabad , Jaunpur's spinning miles, etc. are such examples of small and cottage industries. The demand for these items in international trade, whose route is excessive in foreign countries, is still present today, along with this many other handicrafts industries have also developed in other districts of the state.

मुख्य शब्द : लघु एवं कुटीर उद्योग में रोजगार का सृजन, उद्योग धंधों में विकास, निर्धनता दूर करने का उपायए पूंजी निर्माण, आर्थिक विकास।

Generation Of Employment In Small And Cottage Industries, Development In Industries, Measures To Overcome Poverty, Capital Formation, Economic Development.

प्रस्तावना

जो रोजगार के अवसर सृजित करने के साथ ही विदेशी मुद्रा का भी अर्जुन करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। सामान स्तर के लोगों को यह उद्योग किस प्रकार अधिक रोजगार प्रदान कर सकता है, और इस उद्योग को अधिक सुविधाएं प्रदान कर किस प्रकार अधिक उत्पादन के लिए प्रेरित किया जा सकता है, लघु एवं कुटीर उद्योग एक ओर तो अधिक लोगों को जीविका का साधन कराते हैं, और दूसरी ओर उत्पादन कार्य के आधार पर आय प्राप्त होती है। अतः यह वितरण संबंधी उपाय नहीं बल्कि उत्पादन संबंधी उपाय है। इन दृश्यों से यह निर्धन जनता की निर्धनता दूर करने का सबसे अच्छा सही एवं स्थाई समाधान है, आर्थिक विकास के पक्ष में महत्वपूर्ण बात यह है कि लघु

एवं कुटीर उद्योग अंतर्निहित संसाधनों का उपयोग करने में सक्षम है। इन उद्योगों के सहारे जमा धन उद्यम योग्यता पारिवारिक श्रम कला कौशल आदि संसाधनों का उपयोग किया जा सकता है। इस प्रकार लघु उद्योग अंतर्निहित संसाधनों को उपयोग में लाकर देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

भारतीय संविधान में राज्य के नीति निर्देशक तत्वों के अंतर्गत लघु एवं कुटीर उद्योगों के संवर्धन की व्यवस्था की गई है। योजना आयोग की सिफारिश पर भारत सरकार ने 1955 में अखिल भारतीय खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड की स्थापना की, जिसे 1957 में खादी और ग्रामोद्योग आयोग का नाम दिया गया।

खादी ग्राम उद्योग के कार्यक्षेत्र में खादी के अतिरिक्त गुड और खांडसारी, ताल गुड और शीरा आदि हाथ से बनने वाले कागज, मधुमक्खी पालन, लोहार गिरी, और ऐसा चुना लाख, और औषधि निर्माण करने के लिए जड़ी बूटियों का संग्रह बाप और वेट कथा फल पशुधन तथा फल संस्तरण एल्युमिनियम के बर्तन अनाज और दाल पशुधन चमड़ा, कुटीर दियासलाई आ जाते हैं। वर्तमान समय में इन उद्योगों द्वारा कुल 200 करोड रुपए से अधिक मूल्य की वस्तुओं का उत्पादन प्रतिवर्ष हो रहा है। इसके साथ ही लगभग 20 लाख से अधिक लोग रोजगार प्राप्त किए हुए हैं।

लघु एवं कुटीर उद्योग रोजगार प्रदान की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकते हैं, भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जहां जनसंख्या का तीन चौथाई भाग अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर करता है। लघु एवं कुटीर उद्योग का विशेष महत्व है, उत्तर प्रदेश की भी स्थिति उपर्युक्त संदर्भ में ऐसी ही है प्रदेश की जनसंख्या का एक बड़ा भाग भी अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है और बड़ी संख्या में बेरोजगार युवक पाए जाते हैं ऐसी स्थिति में सरकार के लिए यह बहुत कठिन है कि वह प्रत्येक व्यक्ति को रोजगार दे सके प्रदेश की बेरोजगारी की समस्या को कम करने के लिए लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास अपरिहार्य शर्त हैं ग्रामीण क्षेत्रों में जहां प्रति व्यक्ति का अंतर अत्यंत निम्न है तथा जीवन स्तर एवं उपभोग स्तर भी निम्न है लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेगा लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास से ग्रामीण बेरोजगारों को एक सीमा तक हल किया जा सकता है और कृषि में अतिरिक्त श्रम के समावेशन को कम कर लघु एवं कुटीर उद्योगों में लगाया जा सकता है।

भारत जैसे विकासशील देश में छोटे पैमाने के उद्योगों की उपयोगिता बहुत अधिक होती है क्योंकि यहां पूंजी की कमी और जनशक्ति की अधिकता है लघु उद्योगों के विकास के बिना आर्थिक समस्याओं का निराकरण नहीं किया जा सकता है भारत में प्राचीन काल से ही कुटीर एवं लघु उद्योगों की प्रधानता रही है विदेशी यात्रियों और इतिहासकारों के वर्णन के अनुसार लगभग 2000 वर्ष पूर्व भी भारत के सूती वस्त्र एवं इस्पात उद्योग लघु उद्योगों के रूप में विश्व प्रसिद्ध हो चुके थे 1918 के औद्योगिक आयोग में कहा गया है कि उस समय जब आधुनिक प्रणाली के अन्य स्थान पश्चिमी यूरोप में सब लोग निवास करते थे भारत अपने राज्यों की संपदा एवं अपने कारीगरों की क्षमता के लिए प्रसिद्ध था इससे स्पष्ट होता है कि भारत जैसे देश में लघु उद्योगों की परंपरा बहुत पुरानी है।

अध्ययन के उद्देश्य

उत्तर प्रदेश के आर्थिक विकास के दृष्टि को देखते हुए लघु एवं कुटीर उद्योगों में समन्वित ग्रामीण विकास नियोजन का एक महत्वपूर्ण स्थान है, आने वाले समय के लिए रोजगार का सृजन होगा साथ ही साथ आर्थिक विकास में बढ़ावा मिलेगा, बेरोजगारी दूर होगी जीवन स्तर ऊंचा उठाने के लिए प्रयत्नशील होंगे ।

रोजगार की क्षमता

लघु एवं कुटीर उद्योगों के पक्ष में जो सबसे मूल तर्क प्रस्तुत किया जाता है वह रोजगार क्षमता से संबंधित है यह निर्विवाद तथ्य है कि देश और प्रदेश की सबसे विकट समस्या रोजगार की है देश और प्रदेश में बेरोजगारों की संख्या लाखों में है अल्प रोजगार और मौसमी बेरोजगार से पीड़ित लोगों की संख्या विशेष रूप से अधिक है गरीबी उन्मूलन तथा विकास के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाकर बेरोजगारी को दूर किया जाना अत्यंत आवश्यक है ।

इस संबंध में अभी ध्यान देने योग्य है कि आर्थिक विकास की गति तेज करने के लिए मूल व भारी उद्योगों को स्थापित करना और बढ़ाना अनिवार्य है यह उद्योग सामान्य तौर से पूंजी प्रधान होते हैं और इनमें अपेक्षाकृत कम श्रमिकों की आवश्यकता होती है इस प्रकार इस आवश्यक उद्योगों की स्थापना से पूजी की शेष मात्रा और भी कम होगी और रोजगार अवसरों के सृजन की आवश्यकता और भी बढ़ जाएगी ।

लघु और कुटीर उद्योग इस कसौटी पर पूर्ण रुप से खरे उतरते हैं बड़े पैमाने के उद्योग रोजगार सृजन के संदर्भ में कितने सहायक नहीं हैं क्योंकि इनमें पूंजी प्रधान और श्रम बचत तकनीकों का प्रयोग होता है।

प्रच्छन्न बेरोजगारी और मौसमी बेरोजगारी के समाधान में लघु और कुटीर उद्योग विशेष रूप से अधिक योगदान दे सकते हैं इन उद्योगों को श्रमिकों के निवास स्थान पर भी खोला जा सकता है इन में हो रहे कार्य को आवश्यकता अनुरूप बंद व शुरू किया जा सकता है इस प्रकार एक प्रच्छन्न और मौसमी बेरोजगारी को दूर करने के अच्छे साधन हैं।

पूंजी निर्माण

पूंजी निर्माण के संबंध में घर और लिंडाल ने बड़े उद्योगों के पक्ष में अपना तर्क तो प्रस्तुत किया ही है वह इसी के साथ एक तर्क और भी जोड़ते हैं कि लघु उद्योगों का बचत व विनियोग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है इस को अपनाने व बढ़ाने की सलाह इस कारण दी जाती है कि देश में पूजी की कमी है इनके अनुसार लघु उद्योगों का सहारा लेने से पूंजी की कमी आगे चलकर और बढ़ेगी अपने मत की पुष्टि के लिए घर और ली डाल यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि एक तो लघु उद्योगों में उत्पादन का स्तर नीचा है और यह प्रति इकाई उत्पादन के लिए अधिक पूरी लगाते हैं दूसरे उत्पादन का बड़ा

भाग श्रमजीवीओ को मिलेगा जिन की सीमांत बचत प्रवृत्ति नीची होती है उनकी आय का अधिकांश भाग उपभोग पर खर्च हो जाता है इसके विपरीत लघु एवं कुटीर उद्योगों के पक्ष में यह तर्क प्रस्तुत किया कि प्रति श्रमिक उत्पादित आ कम होने पर भी चुकी अधिक संख्या में रोजगार सुलभ होगा इसलिए समग्र रूप से रोजगार मात्रा अधिक होगी और फल स्वरुप समग्र उत्पादन भी अधिक होगा यह आवश्यक है कि उत्पादन किया आए थोड़ी–थोड़ी मात्रा में बहुत से लोगों के मध्य बिक्री होगी एक बात और भी ध्यान देने योग्य है कि लोगों को जब उनके घर के निकट रोजगार मिलेगा तो संभव है कि उनके उपभोग व्यय में उतनी अधिक ना होने पाए यह भी हो सकता है कि जो कार आर्थिक दृष्टि से सक्षम नहीं है उपयुक्त नीतियों के अपनाने से सक्षम हो सकते हैं धीरे–धीरे लघु एवं कुटीर उद्योगों के अनेक नाम उत्पन्न होने लगे जो इसके पूर्व तक केवल बड़े उद्योगों को ही उपलब्ध होते थे इससे इनकी उत्पादित और उत्पादन पर अनुकूल प्रभाव पड़ा है सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इन उद्योगों के विकास से जनसंख्या के अपेक्षाकृत निम्न या निर्धन वर्ग को आय प्राप्त होगी इनसे उनका जीवन स्तर सुधरेगा और भविष्य की दृश्य अधिक कुशल श्रमिक बन सकेंगे इस प्रकार मौद्रिक रूप से बचत ना भी हो लेकिन कौशल निर्माण अथवा मानव पूंजी के निर्माण में वृद्धि होगी यह देश और प्रदेश के विकास में अत्यंत आवश्यक है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त कसौटीयों पर लघु उद्योगों की भूमिका का मूल्यांकन करने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि आर्थिक सामाजिक और नैतिक सभी दृष्टिकोण से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में लघु उद्योगों को महत्वपूर्ण स्थान देना वांछित ही नहीं अपितु परम आवश्यक भी है। हमारा आर्थिक, सामाजिक और भौगोलिक परिस्थितिया इस प्रकार की है कि लघु एवं कुटीर उद्योगों के आर्थिक समुचित विकास के बिना हम तेजी से आगे नहीं बढ़ सकते हैं। यदि हम गरीबी और बेकारी के भयंकर रोग को दूर करना चाहते हैं, और देश में आर्थिक समानता बढ़ाने और अस्थाई रूप से जनसाधारण का जीवन स्तर ऊंचा उठाने के लिए प्रयत्नशील हैं, तो लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास को उच्च प्राथमिकता देना होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *घर तथा लिडालः दी रोल ऑफ स्माल इंटरप्राइजेज इन इंडियाज इकोनामिक डेवलपमेंट पृष्ठ संख्या 69*
2. *आर्थिक विकास एवं नियोजन डॉ सिंह एसपी एस चंद पब्लिकेशन दिल्ली*
3. *व्यवसायिक पर्यावरण सिन्हा वी.सी*
4. *साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा*
5. *पत्र एवं पत्रिकाएं*
6. *राष्ट्रीय सहारा*
7. *द टाइम्स ऑफ इंडिया*